❀ श्रीः ❀

आत्मा नदी संयम पुण्य तीर्था,
सत्योदकम् शील समाधि युक्ता।
तत्र स्नातः प्रयतः संयतात्मा,
विराजतेदिविसोमो यथैव ॥ २५ ॥

(वामन पुराण अध्याय ४३)

कुरुक्षेत्र रहस्य

प्रथम भाग

—❀—

Haryana Collection

संग्रहकर्ता व प्रकाशक

रामस्वरूप शर्मा मन्त्री सनातनधर्म सभा जीन्द

भदावर प्रेस, ईश्वर भवन, खारीबावली दिल्ली

2167

❀

कुरु रहस्य।

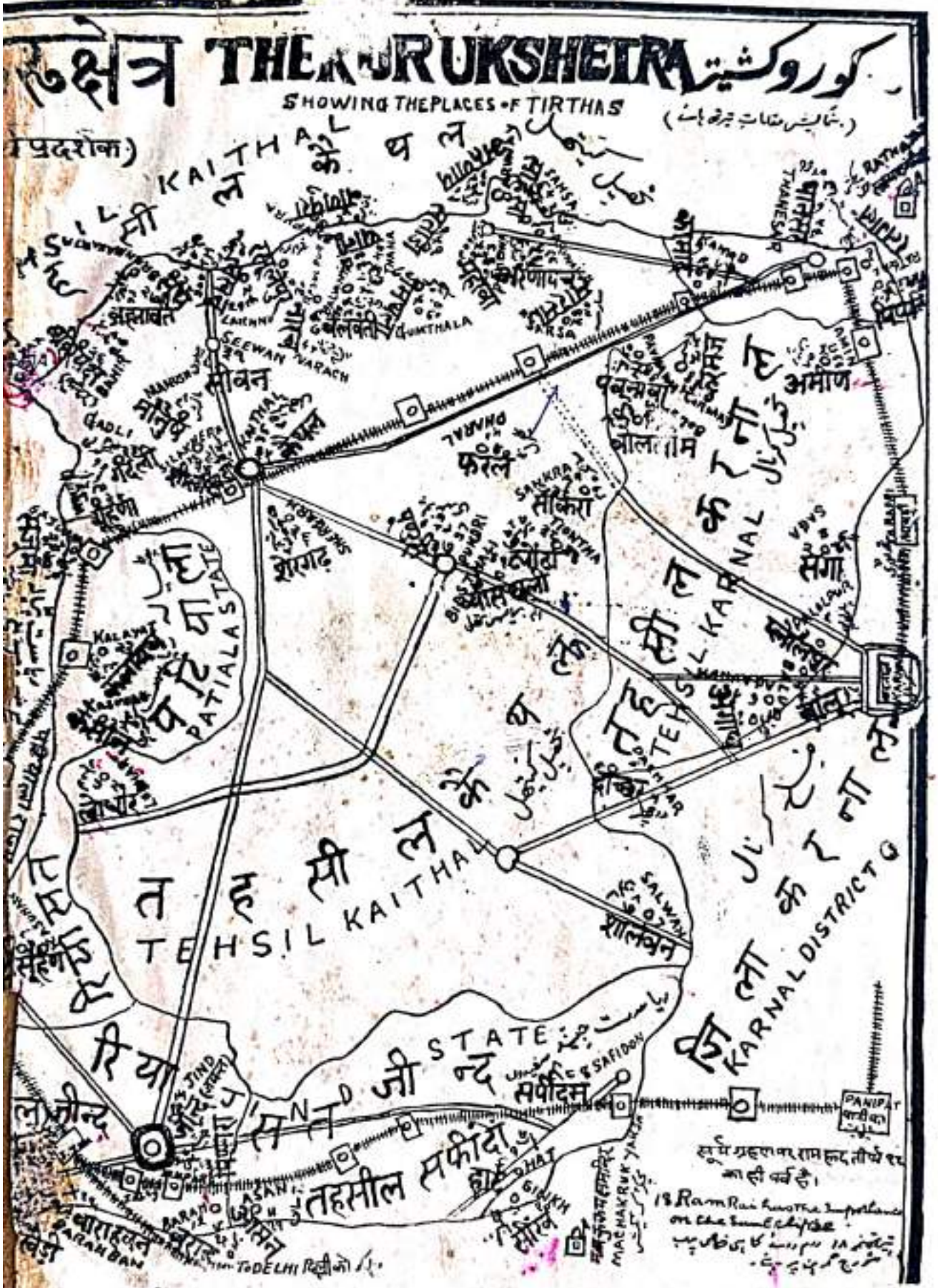

काशक:—पं० रामस्वरूप प्रधान मंत्री स० ध० सभा जीन्द।

सन् 1935

भूमिका

धन्य है १४ जनवरी १९२६ का दिवस, जब मेरे चित्त में कुरुक्षेत्र सम्बन्धी ऐसी २ शङ्काएं उत्पन्न हुईं, जिन पर विचार करते २ मुझ जैसे साधारण गृहस्थ को पेट के धन्दों और धार्मिक वा सार्वजनिक संस्थाओं की सेवा रूपी उलझनों में फंसे हुए भी कुरुक्षेत्र सम्बन्धी साहित्य की खोज पर उतारू होना पड़ा। और इस खोज के अन्त में जिस भाव आशय और परिणाम तक पहुंचा, उसे अपने देशबन्धुओं पर प्रकट करने के लिए आज उद्यत हूं।

इसमें सन्देह नहीं, कि यहां के खोटे भिक्षुओं ने हमारे धन को मूर्खों ने विद्या ज्ञान को, ठगों ने विश्वास को, और धूर्तों ने श्रद्धा वा भक्ति को हरा ही था। रहे बचे अंश का अब ऐसे लोग खोज मिटाना चाहते हैं, जो किसी विषय से अनभिज्ञ होकर भी उसे उठाकर प्रकाशित करने की अनधिकार चेष्टा करते हुए, भूले भटकों की आंखों में धूल झोंक कर धन वा कीर्त्ति को प्राप्त करने का उद्योग करते हैं।

यों तो जीन्द निवासी पं० परमानन्द, कौल निवासी पं० गीताराम और श्रीमद्रामचन्द्र सरस्वती प्रभृति संस्कृतज्ञों ने भी इस विषय पर लेखनी उठाई है, परन्तु उन्होंने केवल धार्मिक दृष्टि से पुरातन शैली का ही अनुसरण किया है। आधुनिक ढंग पर कुरुक्षेत्र रूप निरूपण के लिए ला० दयालीरामजी मन्त्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति ने अवश्य उद्योग किया, परन्तु शास्त्रानभिज्ञता रूपी धब्बा पड़ जाने से उनका दर्पण भी इस मूर्ति का वास्तविक दर्शन नहीं करा सका।

यद्यपि मैं भी शास्त्र ज्ञान नहीं रखता, तथापि पुराणादि शास्त्रों के ढांचे को आधुनिक ढंग के भूगोलादि तत्वों के वस्त्र पहिना कर, धर्म-शास्त्र प्रभृति वचन भूषणों से अलंकृत कर इतिहासादि सामग्री से जो सजीवता लाने का यह प्रयत्न कर रहा हूं, वह यदि इस त्रुटि को पूर्ण कर सका तो अपने को कृतज्ञ समझूंगा।

जिस प्रकार तुलसी रामायण में श्रीरामावतार होने के अनेक कारण लिखे हैं, इसी प्रकार इस छोटी सी पुस्तक रचना के भी अनेक कारण हैं जिनमें से प्रधान प्रधान का पता आलोचना भाग के पाठमात्र से लग जायगा और इसके पाठ पर्यन्त इस पुण्य कुरुक्षेत्र के रहस्य का सार रूपी ज्ञान प्राप्त हो सकेगा, इसी से इसका कुरुक्षेत्र रहस्य ही नामकरण किया गया है।

इससे पहिले कि ग्रन्थारम्भ किया जाय पाठकों को यह बता देना परमावश्यक है कि यह पुस्तक टके बटोरने के लिये नहीं लिखी जा रही है केवल सत्य ज्ञान प्रचार के निमित्त हिन्दू जातिकी यह निष्काम सेवा कर रहा हूँ, और ऐसा करता हुआ अपने उन गुरुजनों से क्षमा-याचना करता हूं जो इसके आलोच्य विषय के किसी अंश को भी अपने विरुद्ध समझें या पाएं। और साथ ही उन महानुभावों को यह चेतावनी दे देना मैं अपना पहला कर्त्तव्य समझता हूं, कि जब आपको अपने कर्त्तव्य का पालन न करके धर्मपथ से च्युत होते देख आपका कोई ढीठ बालक चरण सेवा करते करते अपनी प्रीति दान्तों द्वारा प्रकट करने का उदाहरण स्मरण करा दे तो आपको उससे अप्रसन्न नहीं हो जाना चाहिए अतः मेरे भी इस चाञ्चल्य को क्षन्तव्य ही समझना होगा।

आलोचनादिक किसी विषय के सम्बन्ध में कोई शङ्का होने पर विचार-पूर्वक अपना निश्चय करने के लिये मूल ग्रन्थों का अवलोकन आवश्यक है। इसीलिये स्थान-स्थान पर उनके विविध स्थलों का पता अध्याय व श्लोक संख्या सहित दिया गया है, और जिन ग्रन्थों के आधार पर यह पुस्तक लिखी गई है, या जिनमें कुरुक्षेत्र सम्बन्धी महात्म्यादि का वर्णन है उनकी सूची भी आगे दी जाती है। यदि कोई सज्जन सुधार योग्य त्रुटि से सूचित करेंगे, तो कृतज्ञ हूंगा।

जयन्त नगर (जीन्द)
पौष शुक्ला ९ सम्वत् १९८८
5 7
1935

विद्वत्सेवक
रामस्वरूप शर्मा जीन्दी

कुरुक्षेत्रीय भूगोल

१—स्थिति

भारतवर्ष के अन्तरगत पाञ्चाल (पंजाब) देश में कुरु जाङ्गल है, जहां कमल विकसित सरोवर और पवित्र जल से भरपूर नदियां हैं। और यह देवनिर्मित ब्रह्मावर्त्त सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच में है। (मार्कण्डेय पुराण अध्याय ५८ श्लोक ६, बाल्मीकीय रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग ६४ श्लोक १३, १४, श्रीमद्भागवत स्कन्द ४ अध्याय १६ श्लोक १)

२—सीमाएं

तरन्तुक (रत्न) अरुन्तुक (बहिर) रामह्रद और मचक्रुक (यक्षमन्दिरों) के बीच में यह स्यमन्त पञ्चक ब्रह्मोत्तर वेदी है, अर्थात् दृषद्वती (नदी) के उत्तर और सरस्वती नदीके दक्षिण में यह ब्रह्मर्षियों से सेवित ब्रह्मवेदी कुरुक्षेत्र स्थित है। (महाभारत वन पर्व अध्याय ८३ श्लोक १०५, १०८ वामन पुराण अध्याय २२ श्लोक ५८)

३—विस्तार

दया सत्य और क्षमोत्पादक स्यमन्त पञ्चक कुरुक्षेत्र पांच योजन विस्तार वाला है अर्थात् चारों ओर से पांच पांच योजन (बीस कोस) लम्बी चौड़ी प्रजापति की वेदी और यज्ञ करने

वाले महात्मा कुरु राजा का क्षेत्र है। (नारदपुराण अध्याय ६४ श्लोक २०, वामन पुराण अध्याय २२ श्लोक १५ महाभारत वन पर्व अध्याय १२६ श्लोक २२)

४—नाम करण

सृष्टि रचना के निमित्त ब्रह्माने यज्ञ के लिये जो चार वेदियां, गया प्रयाग, पुष्कर और स्यमन्त पञ्चक में बनाई थीं, उनमें से ही यह उत्तरवेदी रामह्रद स्यमन्त पञ्चक है। इसी से इसे ब्रह्मोत्तर वेदी या ब्रह्मसदन और ब्रह्मावर्त्त कहते हैं। (महाभारत शल्य पर्व अध्याय ५३ श्लोक १। नारदीय पुराणांतरगत कुरुक्षेत्र महात्म्य श्लोक ६, मनुस्मृति अध्याय २ श्लोक १७)

कुरु नाम के राजर्षि ने इस क्षेत्रको कर्षण किया था, इसी से इस का नाम कुरुक्षेत्र पड़ गया है। (महाभारत शल्य पर्व अध्याय ५३ श्लोक २। वामन पुराण अध्याय ३२ श्लोक २३)

कुरु के अतिरिक्त देवताओंने भी यहां यज्ञ किए हैं, इसलिए इसे देवभूमि (देवधरणी) भी कहते हैं। (शतपथ ब्राह्मण ४।१। ५।१६)

यह ब्रह्म सदन देवभूमि कुरुक्षेत्र सब प्राणियों के लिए मुक्तिदायक है, इसलिए इसे अविमुक्तक्षेत्र भी कहते हैं।

(जावालोपनिषद)

द्वापर में परशुरामने ब्रह्मद्वेषी क्षत्रियों के रक्त से पांच कुण्ड भरे थे, जो ऋचीकादि पितरोंके वरदानसे क्षात्र हत्यानिवारण के साथ ही तीर्थभाव को प्राप्त हो गए, इसी से रामह्रद तीर्थ वा

स्यमन्त पञ्चक नाम पड़ा है। (वामन पुराण अध्याय ३५ श्लोक १, २, ८, ११)

आदिमें इस का नाम ब्रह्मोत्तर वेदी था, पीछे रामह्रद नामसे विख्यात हुआ, और फिर कुरुक्षेत्र नाम पड़ गया। (वामन पु० २२। ५७)

सत्युग में सन्निहित, त्रेतामें वायुह्रद और द्वापर के अन्त में रुद्र ह्रद नाम पड़ा। (वामन पुराण अध्याय ४५ श्लोक २६)

इस क्षेत्रमें शिव ज्योतिर्लिङ्ग के अवस्थित रहने और उनके वरदानसे यह शिव क्षेत्र हुआ है। लिङ्गपुराण पूर्वार्द्धअध्याय ७७)

ब्रह्मावर्त और मनु क्षेत्र भी इस का नाम है। (श्रीमद्भागवत स्कन्द ४ अध्याय १६ श्लोक १)

५—वन

काम्यक, दिति, व्यास, फलकि, सूर्य, मधु और शिव इन नामों के सात पुण्यदायक और कलिमल नाशक बन प्रसिद्ध हैं। (नारद पुराण अध्याय ६५ श्लोक ४ से ६ तक। वामन पुराण अध्याय ३४ श्लोक ३ से ५ तक)

इन बनों में ऋषिगणों ने तपस्या करते हुए आश्रम बनाए हुए थे। परन्तु इस समय यह सब बन काटे जाकर वहां बस्तियां और मैदान बनाए जा चुके हैं।

जहां फरल (फल्कु) ग्राम है, वहां फल्की और मधुवन थे, शिव वनके स्थान पर अब सीवन, व्यास बन के स्थान में व्यास

थली, काम्य के स्थान में कामोद और सूर्य वन के स्थान पर सुजूमा ग्राम बसते हैं।

इनके अतिरिक्त एक और बन "बाराहवन" के नाम से इस समय जीन्द शहर के पास मौजूद है, जिसमें नृसिंहढाव, यक्षिणीह्रद आदि तीर्थ अवस्थित हैं।

६—नदियां

सरस्वति, वैतरणी, गंगा मन्दाकिनी, मधुस्रवा, दृषद्वती, कौशिकी और हिरण्यवति (हेरण्वा) ये सात कुरुक्षेत्र की नदियां प्रसिद्ध हैं। परन्तु सरस्वती को छोड़कर और सभी वर्षावाहिनी हैं। इन सबका जल छूने, पीने और स्नान करने में पवित्र होता है। (नारद पु० ६५। ७—६ वामन पुराण अध्याय ३४ श्लोक २, ६, ७)

अधिक वर्षा न होने के कारण अब इन वर्षावती नदियों के चिन्ह भी अलक्षित होते जा रहे हैं। सरस्वती भी कहीं व्याप्त और कहीं गुप्त है। यमुना नदी की एक पश्चिमोत्तरी शाखा यहां बहती है।

७—बस्तियां

जींद, सपीदम, कैथल, कलामत, पूण्डरी, पहोवा और थानेसर यह सात नगर और ८५ ग्राम कुरुक्षेत्र में हैं। चित्र में स्थानाभाव से और अनावश्यक समझ कर सभी न दिखा केवल वही दिखाए गए हैं, जहां यात्राक्रमके तीर्थ विशेष हैं।

८—मार्ग

(क) रेल मार्ग—यहां चार रेल मार्ग हैं, जो प्रधान स्टेशनों सहित चित्रमें अङ्कित किए गए हैं:-

१—पश्चिमोत्तरी रेलवे कम्पनीकी पेशावर बम्बईसे कलकत्तेके प्रधान मार्ग दिल्ली लाहोर वाला।

२—जीन्द पानीपतका शाखा मार्ग।

३—निर्वाण थानेसर का शाखा मार्ग।

४—थानेसर पानीपत का शाखा मार्ग।

(ख) पैदल राज्य मार्ग—

१—कैथल केन्द्रस्थ—कैथल से पूण्डरी, थानेसर, पहेवा, सीवन और जींन्द को जाने के लिये मार्ग हैं।

२—जीन्द केन्द्रस्थ—जीन्द से पूण्डरी, सर्पीदम, हांसी, हिसार और संगरूर, लुधियाना को चार मार्ग जाते हैं।

१०—धार्मिक संस्थाओं के दर्शनयोग भुवन

१—कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति का गीता भवन थानेसर में ज्योति सर पर, जहां भगवान कृष्णकी विशाल मूर्ति स्थापित करके उनके गीता ज्ञान सम्बन्धी साहित्य एकत्रित किया गया है।

२—जीन्द राजधानी में भूतेश्वर तीर्थ के तटपर सनातन धर्म सभा जीन्द की पाठशाला जिसमें संस्कृत हिन्दी कालेज और हाई स्कूल तथा पुस्तकालय और वाचनालय खुले हुए हैं।

३—भूतेश्वर तीर्थ—अमृतसर के नमूने पर विशाल सरोवर भी

दिव्य तीर्थ है। बीच में हरिकैलाश मंदिर यहां से खड़े हाकर टापू की सैर कासा आनंद आता है एक ओर सुन्दर बारह दरियां और चारों ओर सड़क पर आम के वृक्ष शोभा दे रहे हैं।

धर्म लाभ के साथ २ यात्राश्रम निस्संदेह भूल जाता है।

११—पर्वों पर मेले भरने वाले तीर्थस्थान विशेष

१—कार्तिक तथा वैशाख पूर्णिमा रामह्रद।

२—सूर्यग्रहण रामह्रद थानेसर (केवल मेला)

३—सोमवती अमावस्या-पिण्डारा (पिण्ड तारक) तथा पहेवा

४—आश्विन कृष्णा सोमवती अमावस्या—फरल [फल्कु]

१२—रामह्रद सन्निहित तीर्थ की स्थिति

जीन्द के हिन्दू राज्य की राजधानी जीन्द शहर से एक योजन के अन्तर पर है। जो जाखल से ४४, भटिण्डासे१०५, फीरोजपुरसे १५६, लाहोर से २१८ तथा पेशावर से ५०६ मील पूर्व को और दिल्ली से ७६, मथुरा से १६६, भरतपुर से १६०, कोटा से ३७० तथा बम्बई से ६४४ मील पश्चिम को है (चित्र देखिये)

सूर्य-ग्रहण और कुरुक्षेत्र

१—ग्रहण स्वरूप

भारतीय ज्योतिष के सिद्धान्त से सूर्य और चन्द्र अपनी २ कक्षाओं पर घूमते हुए पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं और पाश्चात्य सिद्धान्त से सूर्य की परिक्रमा पृथ्वी तथा पृथ्वी की चन्द्रमा

करते हैं। दोनों सिद्धान्तों से ही जब पृथ्वी और सूर्य के बीच में चन्द्रमा आकर सूर्य विम्ब को आच्छादित कर देता है, तो इसे सूर्य ग्रहण कहते हैं। और ऐसा योग अमावस्या को ही हुआ करता है। यह साधारण बात है, परन्तु पाश्चात्य सभ्यता इस अवसर पर भारतीय दान पुण्य कर्म से विस्मित होकर अनेक प्रश्नों के लिये यह जानने की इच्छुक होती है कि कुरुक्षेत्र का सूर्यग्रहण से क्या सम्बन्ध है ?

२—ग्रहण और कुरुक्षेत्र का परस्पर सम्बन्ध

कहावत है कि जिस व्यक्ति को अत्यन्त कष्ट होता है तो छटी का दूध याद आ जाता है।

जब सबसे पहले पृथ्वी पर मानव सृष्टि की रचना हुई उस समय पहले पहल जहां सूर्य के दर्शन हुए, वह मानव जन्म-भूमि यही कुरुक्षेत्र था। परन्तु जब सूर्य को ग्रह-पीड़ित अवस्था में देखा जाता है, तब वही दृश्य सामने आ जाता है।

ग्रह पीड़ा वास्तव में देश पीड़ा है, ग्रहों के बिगड़ने पर प्रजा को महामारी आदि का जो भय होता है, वह दानसे दूर होता है।

(मार्कण्डेय पुराण अध्याय ५७ श्लोक ५७, ८०)

और जब ग्रहपति सूर्य (लिङ्गपु० अध्याय ५८) ही ऐसी अवस्थाओं में हो तो दान अत्यन्त आवश्यक है।

सृष्टि रचना में भगवान आदित्य का और भूमि निर्माण (उत्थान) में कुरुक्षेत्र का पहला नम्बर है, इसलिये सूर्य-ग्रहण के

पुण्य काल में कुरुक्षेत्र ही पुण्य देश निश्चित होता है । वैसे भी भूमि का दूसरा भाग मेधावी है ।

३—माहात्म्य

यों तो कुरुक्षेत्र का सेवन करना और उसमें नियम संयम सहित निवास करना ही परम पवित्र मोक्ष का दाता है, परन्तु जिन साधारण जनों से संयम व्रतादि का पालन न होकर गृहस्थ में फंसे रहने के कारण कुरुक्षेत्र सेवन का अवसर नहीं, और अश्वमेधादि यज्ञ करने की सामर्थ्य भी नहीं, उनके लिए कुरुक्षेत्र में सन्निहित रामह्रद पर सूर्य ग्रहण के पर्व पर दान करना ही महा फल दायक है ।

नारद, पद्म, मत्स्य, गरुड़, लिङ्ग, वाराह, वामन, वायु तथा महाभारत पुराणों में इसका बड़ा रोचक माहात्म्य वर्णन किया गया है ।

कुरुक्षेत्र में ब्रह्म-हत्यादि पातक विनाशन शक्ति है, यहां तप करने से अखण्ड और अक्षय पुण्य प्राप्त होता है । देवताओं और ऋषियों ने इसका सेवन करके सिद्धि प्राप्त की है । यहां तक कि इसकी धूलि को भी परम गति तक पहुँचा देने वाली बताया गया है ।

४—दान

भारतवर्ष में दान को भारी गौरव प्राप्त है और इसके विधान के लिए हिन्दू शास्त्रों में पूर्ण रूप से विवेचना भी मिलती है । पद्म पुराण के सृष्टि, भूमि तथा स्वर्ग खण्ड, महा-भारत के अध्याय

८२, . . . में दान के लिये देश काल तथा पात्र का देखना . . . ने इकी‍या गया है और साथ ही अपात्र को देना दाता के लिये हा. . .रक लिखा है।

पात्र के साथ काल को नित्य, नैमित्तिक और काम्य तीन भागों में विभक्त किया गया है, सूर्य ग्रहण का पर्व उन्हीं में से है।

नैमित्तिक दान के लिये अनेक काल तो ऐसे हैं, जिनके लिये पत्रा पोथी देखने दिखाने की आवश्यकता पड़ती है, चन्द्र ग्रहण में भी सर्वसाधारण सोए रहते हैं, परन्तु सूर्य ग्रहण का पर्व संसार के सभी मनुष्यों को प्रत्यक्ष चेतावनी देकर दान, जप, होमादि यथाशक्य कार्य करने को प्रेरणा कर देता है।

५—सूर्यग्रहण पर कुरुक्षेत्र में रामहृद सन्निहित तीर्थ का पर्व

कुरुक्षेत्रं महापुण्यं राहुग्रस्ते दिवाकरे। (मत्स्य पुराण १६१। ११
तथा पद्म पुराण स्वर्ग खण्ड १६। १२)

अर्थ—सूर्य ग्रहण में कुरुक्षेत्र सेवन का महा पुण्य है।

यद्ददाति यस्तत्रं कुरुक्षेत्रे रविग्रहे।
तत्तदेव सदाप्नोति नरो जन्मनि जन्मनि ॥

(नारदीय पुराण कुरुक्षेत्र महात्म्य श्लोक १२६)

अर्थ—सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में जो कोई कुछ भी दान करता है वह जन्म जन्मान्तर में उसे मिलता है।

रामह्रदे कुरुक्षेत्रे राहुग्रस्ते विवर्धत होता है । वै

यत्फलं स्वर्णदानेन तज्ज्ञानोदे दिने दिने

अर्थ—सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र के रामह्रद तीर्थ पर स्वर्ण दान करने से प्रति दिन ज्ञान वृद्धि होने लगती है।

कुरुक्षेत्रे रामतीर्थे स्वर्णं दत्वा स्व शक्तितः ।

सूर्योपरागे विधिवत्स नरो मुक्ति भाग्भवेत् ॥

(स्कन्द पुराण केदार खण्ड)

अर्थ—कुरुक्षेत्रमें रामतीर्थ पर अपनी शक्तिके अनुसार सूर्य ग्रहण के समय विधि पूर्वक स्वर्ण दान करने से मनुष्य मोक्ष का भागी होता है ।

तदा सूर्य ग्रहणं, कालेन भविता क्वचित् ।

सन्निहत्यां तदास्नात्वा पूता स्वर्गं गमिष्यसि ॥

(वामन पुराण ३४ । ४० काशी खण्ड ज्ञानवापी माहात्म्य ब्रह्म पुराण)

अर्थ—जब सूर्य ग्रहण हो उस समय सन्निहित तीर्थ में स्नान कर पवित्र होकर तू स्वर्ग में जायगी ।

६—ग्रहण वर्जित कार्य

ग्रहण दिवस के इधर उधर सात दिन अगमोक्त दीक्षा होती है, इस में यात्रा आदि नहीं की जाती । सूर्यग्रहण से तीन प्रहर पहले भोजन का निषेध है ।

ग्रहण के समय आहार, मलमूत्र त्याग नहीं करना चाहिये और इस समयका छुआ हुआ पात्र और पका हुआ अन्न अपवित्र

होजाता ने इक रवकोष, शिवार्चन चन्द्रिका तथा स्मृति के प्रमाण से)

७—स्नान विधि

(मत्स्य पुराण अध्याय ६६ श्लोक ८ से १६ तक)

ग्रहण काल से पहिले ब्राह्मणों से स्वस्ति वाचन कराकर रक्त पुष्प वा चन्दन आदि से चार ब्राह्मणों का पूजन करें।

ग्रहण लगने से पहिले ही जल से भरे चार कलशों में नीचे लिखी वस्तुएं डाल कर उन्हें स्थापित करें—१-गज, अश्व, रथ, सर्प, सरोवर, गो, इन सब के स्थानों की मिट्टी। २-पंच गव्य, ३-सच्चे मोती, ४-गोरोचन, ५-कमल, ६-शङ्ख, ७-पंचरत्न, ८-पन्ना, ९-रक्तचन्दन, १०-गङ्गाजल, ११-सरसों, १२-अमरबेल १३-कुमोदिनी, १४-खशखश और १५-गूगल।

और ब्राह्मण इन कलशों में देवताओं का आवाहन करें।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः ।
आयन्तु यजमानस्य दुरिप्तक्षय कारकाः ॥ १॥

योऽसौवज्रधरोदेव, आदित्यानां प्रभुर्मतः ।
सहस्त्र नयनश्चेन्द्रो, ग्रहपीड़ां व्यपोहतु ॥२॥

मुखं यः सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युतिः ॥
सूर्योपराग सम्भूतामग्निःपीड़ां व्यपोहतु ॥३॥

यः कर्म साक्षी भूतानां, धर्मो महिष वाहनः ।
यमस्सूर्योपरागोत्थां, मम पीड़ां व्यपोहतु ॥ ४ ॥

नाग पाश धरो देवः साक्षान्मकर वाहनः ।
सजलाधि पतिश्चन्द्र ग्रह पीड़ां व्यपोहतु ॥ ५ ॥

प्राण रूपेण यो लोकान्, पाति कृष्ण मृग प्रियः व्रत होता है
वायुस्सूर्यो परागोत्थां, पीड़ामत्र व्यपोहतु ॥ ६
योऽसौ निधिपतिर्देवः, खड्गशूल गदाधरः ।
सूर्योपराग कलुषं, धनदो मे व्यपोहतु ॥ ७ ॥
योऽसौ विन्दुधरोदेवः, पिनाकी वृष वाहनः ।
सूर्योपरागजां पीड़ां, विनाशयतु शंकरः ॥ ८ ॥
त्रैलोक्ये यानि भूतानि, स्थावराणि चराणि च ।
ब्रह्म विष्णवर्क युक्तानि, तानि पापं दहन्तु वै ॥ ९ ॥

इस प्रकार आवाहन करके कलशों के जल से अभिषेक मार्जन करें। और वेद मन्त्रों से ब्राह्मणों और अपने इष्ट देव का पूजन करें। और वस्त्र सहित गो का दान ब्राह्मण को देवें। फिर इन्हीं मन्त्रों से वस्त्र पर अङ्कित करें, और साथ ही ब्राह्मण यजमान के सिर पर रखें।

ग्रहण काल आजाने पर पूर्वाभिमुख हो अपनी २ अभीष्ट आराधना पूजा करें और मोक्ष (समाप्त) हो जाने पर गोदान और स्वस्ति वाचनादिक करें और स्नान करके पट्टी किए वस्त्रादि ब्राह्मणों के लिए निवेदन करें।

८—भगवान कृष्ण का सूर्यग्रहण पर रामहद में आना

(श्रीमद्भागवत स्कन्द १० अध्याय ८२)

एक समय कृष्ण बलराम द्वारिका पुरी में थे कि प्रलय के समान सर्वग्रास सूर्यग्रहण आया। १। सब ओर से दान पुण्य और स्नान के लिये लोग कुरुक्षेत्र गए। २। जहां शस्त्रधारी श्रेष्ठ

परशुराम जी ने इक्कीस बार पृथ्वी के ब्रह्मद्वेषी क्षत्रियों के रक्त से कुण्ड भरे थे। ३। यद्यपि भगवान परशुराम पाप रहित हैं, तथापि लोक मर्यादा रखने के लिये अज्ञानियों की नाईं दोष निवारणार्थ उन्होंने कुरुक्षेत्र में जहां यज्ञ किया था। ४। वहां भारत खण्ड की बहुत प्रजा आई और अक्रूर, बसुदेव, राजा उग्रसेनादि यादव लोग भी। ५। अपने अपने पाप दूर करने के लिये आए। प्रद्युम्न साम्बादि को लेकर श्रीकृष्ण चन्द्र भी गए। ६।

यादवों ने कुरुक्षेत्र में व्रतस्नान करके पुष्प और स्वर्ण मालाओं से भूषित गो ब्राह्मणों को दान दीं। ९।

यादवों ने परशुराम जी के सरोवरों में स्नान कर श्रीकृष्ण प्रीत्यर्थ सङ्कल्प कर ब्राह्मणों को स्वर्ण दान किया। १०। फिर ब्राह्मणों की आज्ञा पाकर कुरुक्षेत्र में आए हुए मित्र गोत्री नाती आदि से परस्पर मिले।

(अध्याय ८४)

इस प्रकार कुरुक्षेत्र में स्त्रियों से स्त्रियां और पुरुषों से पुरुष मिलकर बात चीत कर रहे थे कि श्री कृष्ण बल्देव के दर्शन करने को एक एक दो दो तीन तीन करके सब ऋषि मुनि आगए। २-५।

इन्हें देख राजा युधिष्ठिर (जो यहीं आ मिले थे) श्री कृष्ण और बल्देव सबने प्रणाम किया और यथायोग्य पूजन करने लगे।

धर्म वर्णन कर ऋषियों ने धर्मात्मा बसुदेव जी को कुरुक्षेत्र में अच्छी सामग्री से यज्ञ कराया। ४३। गायन कीर्तन हुआ। ४४-४६

यज्ञ की समाप्ति पर ब्राह्मणों को दक्षिणा में गो, पृथ्वी, द्रव्य दिया। इसके पश्चात ऋषि ब्राह्मण यजमान बसुदेव जी को आगे करके रामह्रद में स्नान करने लगे। ५३।

स्नान करके वस्त्राभूषण पहिन चारों वर्णों को दान करके पूजा की और जीवों में कुत्तों को भी अन्न दिया। ५४।

फिर सब देश के राजाओं और सभासदों वा यज्ञ कराने वालों ने देवता, मनुष्य, भूत, पितर, चारण और गणों का पूजन किया और कृष्ण को सम्बोधन कर यज्ञ की प्रशंसा करते हुए अपने अपने घर जाने की इच्छा की। ५५-५६। और फिर सभी कुरुक्षेत्र से चले गये॥ ७०॥

९—धर्मरक्षा सम्बन्धित राज्य की आज्ञाएं

यह रामह्रद तीर्थ जीन्द के हिन्दू राज्य में है जहाँ कुरुक्षेत्र प्रान्त भर में हिन्दू त्यौहारों, पर्वों तथा एकादशी आदि तिथियों को वहां का रहने वाला मुसलमान तक मांस का कार्य नहीं कर सकता। तीर्थ स्थानों में मदिरा, मांस, का कभी भी प्रयोग नहीं हो सकता। बेचने वालों और मदिरा आदि का प्रयोग करके मेलों में फिरने वालों तथा गन्दे गीत गाने वालों को दण्ड दिया जाता है।

खाने पीने की कोई ऐसी वस्तु बेचने वाला भी दण्ड का भागी है जो स्वास्थ के लिये हानिकारक हो।

गोवध के लिये १० वर्ष तक की जेल होती है और गोवंश को साधारण चोट पहुँचाने पर भी दण्ड मिलता है। वृद्ध गोवंश को

किसी ऐसे बाहरके पुरुष के हाथ बेचनेका भी निषेध है जिससे उस के बध किए जाने की सम्भावना हो।

१०—रोशनी सफाई और चौकीदारा टैक्स

प्रति यात्री)॥ प्रति बाहन दो पहिया।)
स्त्री पुरुष ,, ,, चौ पहिया ॥)
प्रति बोझ ढोने के बाहन पर गधे को छोड़ कर –) गधे पर)॥
दूकानदारों से स्थान के किराये के अतिरिक्त ।)
फिरकर खौंचा बेचने वालों से =)
प्रति लगे हुए हिण्डोले पर –)
साधू सन्तों से यह टैक्स नहीं लिया जाता।

कुरुक्षेत्र माहात्म्य

नारदपुराण वृहदोपाख्यान अध्याय ६४ श्लोक १से१४ तक व ३१-३२
,, ,, ,, ६५ ,, १२१ से १३१ तक
पद्मपुराण स्वर्गखण्ड ,, २६ ,, १से६ तक व ८१से९६
,, ,, ,, १६ ,, ११-१२
,, सृष्टिखण्ड ,, १८ ,, २१८
,, ,, ,, १३ ,, ६
,, ,, ,, ११ ,, १४-१५-५२
,, पातालखण्ड ,, १७ ,, ७५
,, भूमिखण्ड ,, ६४ ,, ३१
महाभारत वनपर्व ,, ८३ ,, १से८तक व १८८से२०७
,, शल्यपर्व ,, ५३ ,,

अग्निपुराण	„ १०६ „ १४ से १६ तक
गरुड़पुराण	„ २८ , ७-८
मत्स्यपुराण	„ १०७ „ ३
„	„ १६१ „ १०-११
लिङ्ग पुराण	„ ६२
वाराह पुराण	„ १८२
वायु पुराण	„ ४३ श्लोक १४-२२
वामन पुराण	„ २२ से ७३ तक

कुरुक्षेत्र सब तीर्थों में मुख्य, कल्याणकारी, पुण्यदायक और सब लोकों को पवित्र करने वाला है, जिस में स्नानादि से पुरुष सब पापों से छूट जाता है।

यहां अनेक ऐसे तीर्थ हैं, जहां मुनीश्वरों ने बड़ी तपस्या की है।

ब्रह्मज्ञान प्राप्त होना, गया में श्राद्ध करना, गो के अर्थ मरना और कुरुक्षेत्र में निवास करना ये चारों भक्ति के साधन हैं।

दूर देश के रहने वाला यदि यह इच्छा बनाये रखे अथवा एक बार भी सत्य प्रतिज्ञा पूर्वक यह कहे कि "मैं कुरुक्षेत्र जाऊंगा और वहां निवास करूंगा" तो वह भी पापमुक्त हो जाता है। और जो धैर्यवान पुरुष वहाँ सरस्वती के तट पर जाकर रहता है, उसे निस्सन्देह ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। कुरु जङ्गल में निवास करने से ही देवता ऋषि और सिद्ध लोग अपनी आत्मा में ब्रह्म-दर्शन करते हैं।

कुरुक्षेत्र की महिमा सब तीर्थों से विशेष है, और महा फल दायक अग्नि के समान पापहारक है।

इस क्षेत्र में ब्रह्मा ने सृष्टि रचने की इच्छा से, विष्णु ने उसकी स्थिति के लिये वहां तप किया और शिव भी उसमें प्रवेश कर स्थित हुए।

पिता-मरण के दुःख से दुखी परशुराम ने ब्रह्म द्वेषी क्षत्रियों के रक्त से कुण्ड भर कर पितरों को तृप्त किया। और पाप-नाश के लिये वहां तप किया, जहां पापनाशक रामतीर्थ उत्पन्न हुआ। मार्कण्डेय मुनि ने भारी तपस्या की।

यहां तप करने वाले अखण्ड पुण्य प्राप्त करते हैं और मरने पर विमान पर चढ़ ब्रह्मलोक को जाते हैं।

यहां पर व्रत, दान, होम, जप और देव पूजन सभी निस्सन्देह अक्षय होजाते हैं। और जो लोग धर्म युक्त यहां शरीर त्यागते हैं, वे फिर जन्म नहीं लेते।

ग्रह नक्षत्र और तारागणों का समय पाकर पतन हो जाता है, परन्तु कुरुक्षेत्र में धर्मयुक्त मरे हुए पुरुषों का कभी पतन नहीं होता। जिससे इस तीर्थ क्षेत्र के सेवन की देवता, ऋषि, सिद्ध और गन्धर्व भी इच्छा रखते हैं।

कुरुक्षेत्र के बनों नदियों और तीर्थों की जो मनुष्य पुण्यप्रद यात्रा करता है, उसे इस लोक और परलोक में किसी प्रकार की इच्छा नहीं रहती।

कुरुक्षेत्र के समान कोई तीर्थ न हुआ है और न होगा। यहाँ की बारह यात्रा करने से फिर जन्म नहीं होता।

वेदज्ञ कहते हैं कि वहां पर पूरित इष्ट, तप, यज्ञ और दान विधिपूर्वक करने से अक्षय होते हैं।

मन्वादि और युगादि तिथियों में, सूर्य और चन्द्र ग्रहण में, महापात और संक्रान्ति में, तथा किसी और शुभ अवसर पर कुरुक्षेत्रकी यात्रा और स्नान से अनन्त फल मिलता है और कलियुगी पापों से मुक्त पावन हो जाते हैं।

ब्रह्मा ने इस सुखदायक तीर्थ कुरुक्षेत्र को रचा है।

जो इसकी पवित्र और पापनाशिनी कथा को भक्ति से कहता और सुनता है, वह सब पापों से छूट जाता है।

कुरुक्षेत्र की रक्षा के लिये विष्णु भगवान ने यक्ष, चन्द्रमा, सूर्य, वासुकि, शंबकार्णक, विद्याधर, सुकेशी और राक्षसों को विशेषता से नियुक्त किया कि वह धनुर्धारी आठ सहस्र चाकरों सहित सदा कुरुक्षेत्र को पापियों से बचाते रहें।

सूर्यग्रहण में यहां जो दान किया जाता है वह सदा जन्म जन्म में पाता है।

यदि मोक्ष की इच्छा हो तो कुरुक्षेत्र सेवन करना चाहिए, यहां महापुण्य और महातप है।

इस शिवतीर्थ की यात्रा को जाने से ही महा ज्ञान मिलता है। कुरुक्षेत्र के समान फलदायक भूमि पर और कोई तीर्थ नहीं है। यहां पर आचार विचार से रहने वाले और सीधे साधे सभी लोगों की मुक्ति होती है। इसका माहात्म्य सर्वपाप नाशक पुण्य प्रद और मोक्षदायक है।

यहां विष्णु आदि देवताओं को निवास मात्र से प्राप्त होता है और सरस्वती के निकट स्नान करने से ब्रह्मलोक को चला जाता है।

कुरुक्षेत्र की धूलि भी परमगति को पहुँचा देती है।

कुरुक्षेत्र में भूतेश्वर तीर्थ पर जो मरता है वह मनुष्य सीधा स्वर्ग में जा निवास करता है और ब्रह्मा के दिन (मन्वन्तर) तक पृथ्वी पर नहीं गिरता।

सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्र सेवन करना महा पुण्य है, ब्रह्मादि देव, ब्रह्मर्षि, गन्धर्व, चारण, सिद्ध, अप्सरा, सर्प महापुण्यकारी इस ब्रह्मक्षेत्र को जाते हैं। वहां श्रद्धायुक्त जाने से वाजपेय और अश्वमेध यज्ञ का फल होता है।

सन्निहित तीर्थ में ब्रह्मादिक देवता और बड़े पुण्यवान तपस्वी ऋषि महीने महीने पहुँचते हैं।

सूर्यग्रहण में वहाँ का ऐसा माहात्म्य है जैसे निरन्तर सौ अश्वमेध यज्ञ कर लिये। प्रत्येक अमावस्या को पृथ्वीभर के व्यापी तीर्थ पुण्य स्थान और उद्यान के ब्राह्मण यहां आते हैं। तीर्थों के प्राप्त करने से पृथ्वी पर सन्निहित प्रसिद्ध है वहाँ स्नान और जलपान मात्र से स्वर्ग मिलता है।

पृथ्वी में पुण्यकारी नैमिष, आकाश में पुष्कर और तीनों लोक में कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध है, वहां की वायु से उड़ी हुई धूली पापी को भी अवश्य श्रेष्ठ गति देती है।

सरस्वति के दक्षिण और उत्तर जो कुरुक्षेत्र में बसते है स्वर्ग में निवास करते हैं।

पुण्यकारी ब्रह्मवेदी ब्रह्मर्षियों से सेवित कुरुक्षेत्र है, इसमें बसते हैं वह कभी शोचनीय नहीं होते।

कार्तिक मास की पूर्णिमा, बैशाख की पूर्णिमा, चन्द्र औ सूर्यग्रहण यह कुरुजांगल देश में पुण्यकाल कहलाते हैं।

कुरुक्षेत्र नामी महापुण्य तीर्थ जिसमें पितृलोक जाने मार्ग भी दिखाई देता है, वहाँ अब भी नीलकण्ठ नाम से प्रसि पितृ तीर्थ प्रकाशमान है जो मनइच्छा फल देता है, वहीं दूस पुष्कर नाम का एक और तीर्थ भी है।

जा इस क्षेत्र में आलस्यशून्य हो अनाहार प्राण त्याग करेगा अथ युद्ध में वीरता पूर्वक मर जायगा, वह अवश्य स्वर्ग में पहुँचेगा

यहाँ सर्व हत्यानाशिनी और महा पुण्यकारिणी सरस्व है। स्यमन्त पञ्चक नामक महा पातकनाशन एक तीर्थ है।

कुरुक्षेत्र, काशी आदि में जो संन्यास लेकर निवास करे दूसरे जन्म में पाशुपत योग को प्राप्त होता है।

और तीर्थों की यात्रा आरम्भ करने में मुण्डन और उपव सादि क्रिया का विधान है, कुरुक्षेत्र के लिये इसकी भी आवश कता नहीं।

कुरुक्षेत्र में ब्रह्महत्यादि पातक विनाश कर देने की शक्ति है सरस्वति को छोड़ जो शेष नदियाँ कुरुक्षेत्र में वर्षाबाहिनी उन्हें रजस्वलायन कभी नहीं होता।

॥ श्रीः ॥

कुरुक्षेत्रीय यात्राविधि

जब यात्रा को जाना हो तो पहिले स्नानादि नित्यक्रिया से निश्चिन्त होकर श्राद्ध करना चाहिए और ब्रह्मभोज्य कराने के पश्चात् इस प्रकार स ङ्कल्प करके यात्रारम्भ करे।

संकल्प—अद्य ब्रह्म णो द्वितीय परार्द्धे, श्री श्वेत बाराह कल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, कलियुगे, कलिप्रथमचरणे, जम्बू द्वीपे, भरत खण्डे, मेरोर्दक्षिणपार्श्वे, अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके, प्रभवादि-षष्टी सम्वत्सराणाँमध्ये, (अमुक) सम्वत्सरे, (अमुक) मासे, (अमुक) पक्षे, (अमुक) तिथौ, (अमुक) वासरे, यथायुक्त नक्षत्र योगकरणादि समन्विते, (आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धि, शान्ति, तुष्टि, पुष्टि, सत्सन्ताभिवृद्धि पूर्वक), ज्ञान, भक्ति, वैराग्य सिद्धि प्रद श्रीमन्नारायण प्रीत्यर्थं कुरुक्षेत्रीय तीर्थस्नान देवदर्शन पूर्वक (तत्र तत्र तथा शास्त्र विहितं) यात्रांगभूतं सर्वकर्माहंकरिष्ये।

यक्षपूजा—कुरुक्षेत्र में पहिले यक्षमन्दिर पर पहुँचकर यक्ष देव की पूजा कर फिर दूसरे स्थानों पर यथा क्रम जाना चाहिये, यह क्रम आगे दिये यात्राक्रम सूचक चक्र में लिखा जाता है।

जानना चाहिये कि कुरुक्षेत्र की चारों कोण में चार यक्ष विराज मान हैं उन चारों की पूजा का एक ही विधान यह है कि स्नानादि करके फल सुगन्ध मिष्टान्नआदि समर्पण करते हुए पूजा कर इस प्रकार हाथ जोड़ प्रार्थना करनी चाहिए।

प्रार्थना—तव प्रसादाद्यक्षेन्द्र, बनानि सरितस्तथा।
भ्रमतो मम तीर्थानिम्, अविघ्नं जायता नमः ॥१॥

अर्थात्– हे यक्षेन्द्र ! आपके प्रसादसे मेरी यह बन और सरोवरों के भ्रमणरूपी तीर्थयात्रा निर्विघ्न समाप्त हो, मैं नमस्कार करता हूँ।

कुरुक्षेत्रीय तीर्थावली

ग्राम स्थान संख्या	नाम	तीर्थ स्थान क्रमसंख्या	स्नानार्थ तीर्थ	पूजार्थ मन्दिर	फल प्राप्ति	इतिहासादि संक्षेप
१	रत्तगल			मचक्रुक (मतर्णक)		
	पीपली	१	...	अर्थात रत्नुकयक्ष	यात्रा में निर्विघ्नता	
२	मगा	२	विमल (विष्णु स्थान)	विमलेश्वरहरि	विष्णुलोक प्राप्ति	
३	पलोलपुर	३	पारिप्लव	...	(वेदज्ञ ब्राह्मणको दक्षिणासे प्रसन्न करे) ब्रह्मयज्ञ फल हो	
४	बालू	४	कौशिकी सङ्गम	...	वियोग दुःख निवारण	
५	अगौन्ध	५	पृथ्वी तीर्थ	...	पाप मुक्ति उत्तमगति और सहस्र गोदान फल	
६	दाच्छर	६	दशाश्वमेध	दक्षेश्वर शिव (दक्षाश्रम)	अश्वमेध यज्ञ फल	
७	शलवण	७	शालुकिनी		शिव सहित विष्णु मनोरथ सिद्धि	
८	सर्पीदम	८	नाग तीर्थ (सर्पदमन या सर्पीदेवी)		घृत व दधि दान से नाग भय दूर हो	
९	सींख	९	...	तरन्तुक या अतर्णक यक्ष	(रात्रि निवासकर ब्रह्मभोज्य कराए) सहस्र गोदान फल	
१०	हाट	१०	पञ्चनद	हटकेश्वरशिव	पञ्चयज्ञ फल	
,,	,,	११	कोटि	कोटीश्वर और वामनदेव	अग्निष्टोम यज्ञ फल	
११	आशन	१२	अश्विनीकुमार (श्वी) तीर्थ	...	श्राद्ध करनेसे यश और रूप की प्राप्ति हो	
१२	वराह	१३	बाराह तीर्थ	बाराहभगवान	सद्गति, परमपद प्राप्ति	पहिले बाराह रूपसे विष्णु भगवान यहीं रहे थे, महाभारत वन पर्व अध्याय ८३ श्लोक १८

संख्या ग्राम	स्थान क्रमसं०	तीर्थ स्नान	पूजार्थ मन्दिर	फल प्राप्ति	इतिहासादि संक्षेप
१३ (पाण्डव) पिण्डारा	१४	पिण्ड तारक (सोमतीर्थ पूर्व भाग)		(पिण्ड दान और गोदान करे) राजसूय यज्ञ फल हो	
१४ जीन्द (जयन्तपुरी)		सोमतीर्थ (उत्तर भाग)	सोमेश्वरशिव (सोमनाथ)	"	यहां चन्द्रमा तप करके पाप (यक्ष्मा रोग) से मुक्त हुआ था
" "	१५	भूतेश्वर(भूतालय)	भूतनाथशिव	जन्मान्तर मोक्ष	
" "	१६	ज्वालमाला	ज्वालमालेश्वरशिव	"	
१५ इकहँस	१७	इकहंस(ढूँढू)	...	सहस्र गोदान फल	
१६ बाराहवन	१८	कृतशौच (नृसिंह ढाब)	...	पुण्डरीक लोकप्राप्ति	
" "	१९	मुञ्जवट और यक्षिणी ह्रद	महामाही यक्षिणी देवी	रात्रि निवासकर स्नान व्रत, पूजा और ब्रह्म भोज्य से महापातक भी दूर हों पुत्र इच्छुक को श्रद्धा पूर्वक अवश्य पुत्र मिले	यही कुरुक्षेत्रका द्वार है। महाभारत वन पर्व अध्याय ८३

संख्या ग्राम	स्थान क्रमसं०	तीर्थ स्नान	पूजार्थ मन्दिर	फल प्राप्ति	इतिहासादि संक्षेप
१६ बाराहवन	२०	जया		सब काम पूर्ण	
१७ पुहकरखेडी	२१	पुष्कर	पितृपूजन	कार्तिकीय पूर्णिमाको (कन्यादान करे) सकल मनोरथ हो	महात्मा परशुराम ने भी यहां स्नान कर प्रदक्षिणा पूर्वक देव और पितृतर्पण किया था
१८ रामह्रद (रामराय)	२२	...	कपिल यक्ष	(प्रदक्षिणा पूर्वक पूजन) यात्रा में निर्विघ्नता	
" "	२३	...	यक्षीदेवी उलूखल मेखला	पापियों को स्नानमें विघ्न और पुण्यात्माओं को निर्विघ्नता	
" "	२४	रामह्रद (स्यमन्तपञ्चक)	(भगवान भार्गव) परशुराम	(पितृ वा देवर्षितर्पण, स्वर्ण दान,राम पूजा) धन सम्पति प्राप्त और अन्त में मोक्ष हो	

संख्या	ग्राम स्थान	क्रमसं०	तीर्थस्थान	देव दर्शन	फल प्राप्ति	इतिहासादि संक्षेप
१८	रामह्रद (रामराय)	२५	सन्निहित ।	...	सूर्यग्रहण का पर्व है	
१९	वर्शोला	२६	वंशमूल	...	वंशवृद्धि	
२०	कसूह्र	२७	काया शोधन	...	पवित्रात्मा हो हरि से मिल जाय	
२१	लोद्धार	२८	लोकोद्धार	जनार्दन भगवान	विष्णुलोक प्राप्ति	
२२	कसान	२९	श्री तीर्थ (शालिग्राम)	हरि	हरि भक्ति और उत्तम श्री प्राप्ति	
२३	कलावथ	३०	कपिलाह्रद	कपिल देव	(पितृ पूजन) सहस्र कपिला गोदान फल और शिव प्राप्ति	
२४	सूर्जुमा	३१	सूर्य तीर्थ	...	(सूर्य व्रत व पूजा) अग्निष्टोम यज्ञ फल	
२५	गूहण (गोभवना)	३२	पृथ्वी विवर द्वार (गोभवन अथवा	गणपति	यज्ञ फल	
”	”	३३	गङ्गा देवी तीर्थ		”	
”	”	३४	केव्यास्तीर्थ (शङ्खन)	...	”	
२६	बहिर	३५	...	अरन्तुक यक्ष (लवणक)	यात्रा में निर्विघ्नता	
२७	ब्रह्मावर्त	३६	ब्रह्म तीर्थ	कुबेर	अग्निष्टोम यज्ञफल	
२८	सूथ	३७	सुतीर्थ	देव पितर	पितृलोक प्राप्ति वा अश्वमेध यज्ञ फल	
२९	लखनू	३८	कामेश्वर (काशीश्वर)	...	स्वास्थ्य और ब्रह्म लोक प्राप्ति	
३०	रसूलपुर	३९	मातृ तीर्थ	...	सात कुल तक लक्ष्मी वृद्धि	
३१	सीवन	४०	शिववन [शीतवन] अथवा सीता वन	...	इक्कीस पीढ़ी पवित्र हों	
”	”	४१	महत्तीर्थ [दण्डुक]	...	सिर धोने मात्र से पवित्रता	
”	”	४२	शिवा बिल्वमापह [स्वर्ण लोमापनयन]	...	पाप मुक्त हो	
”	”	४३	दशाश्वमेधिक	...	”	

संख्या	ग्राम स्थान	क्रमसं०	तीर्थ स्नान	देव दर्शन	फल प्राप्ति	इतिहासादि संक्षेप
३२	मानुष	४४	मानुषाह	...	पाप मुक्ति वा स्वर्ग-प्राप्ति	यहां व्याधके भयसे भागे हुए मृग घुसते ही मनुष्य हो गए थे
३३	गढ़ली	४५	आपगा	...	(स्यामक क्षीर के ब्रह्मभोज्य और भाद्र-पद वा आश्विनकृष्णा-चतुर्दशीको मध्यान्हमें पिंडदान) पापमुक्त हो	
३४	शोलाखेड़ा	४६	ब्रह्मोदुम्बर (ब्रह्मास्वर) या सप्तर्षि कुण्ड	...	सोम यज्ञ फल वा ब्रह्मलोक-प्राप्ति	सप्तर्षियों ने एकत्रित होकर यह तीर्थकल्पित किया इससे सप्तर्षि कुण्डऔर ब्रह्मा ने इस कासेवन किया इससे ब्रह्मोदुम्बर नाम पड़ा
३५	कैथल	४७	वृद्ध... ((विधिक्यार) (कपिस्थल)	दण्डी सहित शिव		मिला दियेथे इसलिये मिश्रक नाम पड़ा।
३६	शेरगढ़	४८	कलशी	अम्बिका		
"	"	४९	कृष्णभूता सरक	महेश्वर मनीषी	सहस्र गोदान, और मन चिन्तन फल	जब नृसिंहरूप से हिरण्य कश्यप को
"	"	५०	रुद्रकोटि			
"	"	५१	इन्द्राम (नीड़)			
			(८ विमूढ़ होगए तो दिव्य सहस्र वर्ष तक रुद्र से यहां युद्ध होकर निवारित हुए थे			
"	"	५२	समय जब दोनों सर में गिरपड़े थे तो उसके तट पर नारद मुनि आश्रम स्थित थे।			
"	"	६४	मधुवन्नि(मधुवट) देवर्षीतर्पण और देवी तीर्थ		सिद्धि प्राप्ति	
"	"	६५	कौशिकी और दृषद्वती सङ्गम	...	परिमित भोजन करने वाले जितेन्द्रिय पाप मुक्त हो	
४१	व्यास्थली	६६	व्यासस्थली	...	सहस्रगोदान फल	
"	"	६७	किन्तुघ्न कूप (ऋणान्तकूप)	तिलदान	सिद्धि और ऋण से मुक्ति	

संख्या	ग्राम स्थान	क्रमसं०	तीर्थ स्नान	देव दर्शन	फल प्राप्ति	इतिहासादि संक्षेप
३२	मानुष	४४	मानुषाह	...	पाप मुक्ति वा स्वर्ग-प्राप्ति	यहां व्याधके भयसे भागे हुए मृग घुसते ही मनुष्य हो गए थे
३३	गढ्ली	४५	आपगा	...	(स्यामक चीर के ब्रह्मभोज्य और भाद्रपद वा आश्विनकृष्णाचतुर्दशीको मध्यान्हमें पिंडदान) पापमुक्त हो	
४०	फरल (फल्कु)	५९	(दृषद्‌दुम्बर (ब्रह्मास्वर) र्षि कुण्ड	...	सोम यज्ञ फल वा ब्रह्मलोक-प्राप्ति	सप्तर्षियों ने एकत्रित होकर यह तीर्थकल्पित किया इससे सप्तर्षि कुण्डऔर ब्रह्मा ने इस कासेवन किया इससे पड़ा
"	"	६०	सर्व देव			
"	"	६१	पाणिख्यात्		योग कर्म फल(ऋषि-लोक प्राप्ति)	

संख्या	ग्राम स्थान	क्रमसं०	तीर्थ स्नान	देव दर्शन	फल प्राप्ति	इतिहासादि संक्षेप
४०	फरल (फल्कु)	६२	मिश्रक		सर्व तीर्थ स्नान फल वा श्रेष्ठ गति	व्यास जी [illegible] के लिये बहुत[illegible] मिला दियेथे इसलिये मिश्रक नाम पड़ा।
"	"	६३	मनोजव (मनोज्ञ)	मनीषी	सहस्र गोदान, और मन चिन्तन फल	जब नृसिंहरूप से हिरण्य कश्यप को❀

❀ मार विष्णुमोह विमूढ़ होगए तो दिव्य सहस्र वर्ष तक रुद्र से यहां युद्ध होकर निवारित हुए थे युद्ध करते समय जब दोनों सर में गिरपड़े थे तो उसके तट पर नारद मुनि आश्रम स्थित थे।

संख्या	ग्राम स्थान	क्रमसं०	तीर्थ स्नान	देव दर्शन	फल प्राप्ति	इतिहासादि संक्षेप
"	"	६४	मधुवन्ति(मधुवट) और देवी तीर्थ	देवर्षीतर्पण	सिद्धि प्राप्ति	
"	"	६५	कौशिकी और दृषद्वती सङ्गम	...	परिमित भोजन करने वाले जितेन्द्रिय पाप मुक्त हो	
४१	व्यास्थली	६६	व्यासस्थली	...	सहस्रगोदान फल	
"	"	६७	किन्दुश कूप (ऋणान्तकूप)	तिलप्रदान	सिद्धि और ऋण से मुक्ति	

संख्या	ग्राम स्थान	क्रमसं०	तीर्थ स्नान	देवदर्शनादि	फल प्राप्ति	इतिहासादि संक्षेप
४१	न्यास्थली	६८	कृतजप वेदी (किञ्जप)	कोटीश्वर शिव	कोटियज्ञफल (सूर्यलोक प्राप्ति	
"	"	६६	आह	...		
"	"	७०	मुनिन (मुदित वा सुदिव)	...		
"	"	७१	मृगधूम	...	अश्वमेध यज्ञफल	
४२	बोलसाम	७२	देवीतीर्थ	...	सहस्रगोदान फल	
"	"	७३	विष्णुपद (अर्थात्) वामन (वामनक)	वामन भगवान	विष्णुलोक प्राप्ति	यहां बलि की यज्ञ में प्राप्त होकरवामनरूप विष्णु ने राजा बलि का राज्य इन्द्र को दिया था।
"	"	७४	ज्येष्ठाश्रम	...	ज्येष्ट शुक्ला एकादशी व्रत कर द्वादशी को स्नान वा श्राद्ध करे	

(२९)

संख्या	ग्राम स्थान	क्रमसं०	तीर्थ स्नान	देवदर्शनादि	फल प्राप्ति	इतिहासादि संक्षेप
४२	बोलसाम	७५	कोटि	कोटीश्वर शिव	गणाध्यक्षपद प्राप्ति	
"	"	७६	सूर्यतीर्थ	...	सूर्यलोक प्राप्ति	
४३	कर्मज	७७	कुलोत्तारण (कुलायुन)	...	कुल सहित कल्पान्त स्वर्ग प्राप्ति	
४४	पवनाषा	७८	पवनह्रद (वायुह्रद)	महेश्वर	शिवपद प्राप्ति	यहां पुत्र शोक से आकुल होकर वायु लीन होगये थे, देवताओंने फिर प्रकट किये हैं।
४५	सारसा	७९	हुनमतीर्थ अर्थात् अमरह्रद(देवह्रद)	...	मुक्ति	
"	"	८०	शालिहोत्र	...	पाप मुक्ति और सहस्र गोदान फल	
४६	बाणपुरा	८१	श्रीकुञ्ज (श्रीकुम्भ)	...	अग्निष्टोम यज्ञ फल	
४७	नारच	८२	नैमिषीयासरस्वती कुञ्ज (कुण्ड)	...	" (नैमिषारण्य फल)	

(३०)

संख्या	ग्राम स्थान	क्रमसं०	तीर्थ स्नान	देवदर्शनादि	फल प्राप्ति	इतिहासादि संक्षेप
४८	बलवन्ती	८३	देवतीर्थ या सीता (कन्या) तीर्थ	...	स्त्री पातिव्रत प्राप्ति, सहस्र गोदान फल	
४९	थाना	८४	ब्रह्मतीर्थ	...	ब्रह्मत्व प्राप्ति	
५०	गुमथला	८५	सोमतीर्थ	...	स्वर्गगति	
"	"	८६	सप्त सारस्वत १–सुप्रभा २–काञ्चनाची ३–विशाला, ४–मनोहरी (मनोरमा) ५–सुनन्दा, ६–सुवेणा ७–विमलोदका	शिव १–सुप्रभा जो ब्रह्मा यज्ञमें बुलाईहुई पुष्करमें थी, २–काञ्चनाची सौनकादिक की बुलाई हुई जो नैमिषारण्य में स्थित थी। ३–विशाला जो गय राजा के यज्ञमें बुलाई हुई गयामें स्थित थी। ४–उद्दालक मुनि की बुलाईहुई जो उत्तर कौशलदेश में स्थित थी,। ५–सुनन्दा कुरुराजा के यज्ञ में आवाहन की हुई और मार्कण्डेयकी अभिसेचन की हुई। ६–सुवेणा जो केदार में स्थितथी। ७–जो दक्ष ने यज्ञ में गंगा तट पर प्रकट की थी।	मुक्ति	यहां (कश्यप ऋषिके मन से जन्मे) मंकण ऋषि ने सातों सरस्वती प्राप्त की थीं। इन्हें जब सिद्धि प्राप्त होकर कुशा लगने से रक्त के स्थान पर शाक रस निकलने लगा तो प्रसन्न हो नाचने लगा जिससे उसके साथ ही विश्वभर नाचने लगा। फिर महादेव ने आकर उसे निवारित किया।

५१	सतोडा	८७	औशनस अथवा कपाल मोचन	कार्त्तिकेय	पाप मुक्ति	यहां शुक्राचार्य गुरु भावको प्राप्त हुए थे
५२	पेहोवा	८८	अग्नितीर्थ	...	अग्निलोक प्राप्ति तथा वंशोद्धार	
"	"	८९	विश्वामित्र	...	ब्राह्मण्य प्राप्ति	यहां विश्वामित्र ने तपस्या से ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था।
"	"	९०	ब्रह्मयोनि	...	ब्रह्मलोक प्राप्ति	यहां ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण बाहुसे क्षत्री उरूसे वैश्य और पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए थे
"	"	९१	पृथूदक	कार्त्तिकेय	मोक्ष प्राप्ति (अश्वमेध यज्ञ का फल)	गंगा द्वार पर रहने वाले रुषँगू मुनि ने अन्त समय अपने*

* पुत्रों से कहा मैं यहां कल्याण नहीं देखता पृथूदक ले चलो वे वहां ले आए।

संख्या	ग्राम नाम	क्रमसं०	तीर्थ स्नान	देवदर्शन	तीर्थ सेवन फल	इतिहासादि संक्षेप
५२	पेहोवा	९२	मधुस्रव	...	पातक हरण और	
				...	सहस्र गोदान फल	
,,	,,	९३	अनुकीर्ण(अनकीर्ण) या अर्द्धकील	...	ब्रह्मचर्य और विद्या वृद्धि	
,,	,,	९४	वसिष्ठोद्वाह	...	वसिष्ठलोक प्राप्ति	विश्वामित्रकी आज्ञा से सरस्वतीको विवश हो वसिष्ठ जी को बहाकर लाना पड़ा था और उसे उनके मारने पर उतारू देख ब्रह्महत्या भय से उल्टा बहा ले गई थी।
५३	अरुणाय	९५	सरस्वती अरुणा सङ्गम	...	तीन रात व्रत कर स्नान से विचार मुक्त हो	
५४	साहसा	९६	शत साहस्रक	...	सहस्र गोदान फल	यह तीर्थ दर्भी मुनि रचित है।
,,	,,	९७	शतक	...	...	,,
,,	,,	९८	सोमतीर्थ	...	...	,,
,,	,,	९९	ऋणमोचन (विमोचन)	...	पापमुक्ति	
५५	अरणयच	१००	रेणुकाश्रम	...	अग्निष्टोम यज्ञ फल	
,,	,,	१०१	पञ्चवट	पञ्चवट महादेव	देवताओं के साथ आनन्द प्राप्ति	
,,	,,	१०२	तैजस (औजस)	...	चैत्र कृष्णा षष्ठीको श्राद्ध करने से सन्निहित का सा फल प्राप्त हो	वामन पुराण अध्याय ५१ श्लोक १०
५६	थानेसर	१०३	कुरुध्वज तीर्थ	कुरुध्वज देव	सर्वसिद्धि, स्वर्ग और ब्रह्मलोक प्राप्ति	यहां कुरु राजा ने क्षेत्र को कहने के के लिये घोर तप किया।
,,	,,	१०४	स्वर्ग द्वार	...	स्वर्ग महिमा प्राप्ति	
,,	,,	१०५	अनरक (ह्यनरक) अथवा छेद नरक	ब्रह्म विष्णु और शिव पार्वती	सर्व पाप मुक्ति वैशाख की छठ और मङ्गलवारकी छठ का पर्व	

संख्या	ग्राम नाम	क्रमसं०	तीर्थ स्नान	देवदर्शन	तीर्थ सेवन फल	इतिहासादि संक्षेप
५७	कामोद	१०६	सर्वदेव	...		
,,	,,	१०७	स्वस्तिपुर (अस्थिपुर)	...		
,,	,,	१०८	पावन (पवित्र)	...		
,,	,,	१०९	गङ्गा ह्रद	...	राजसूय यज्ञ फल	
,,	,,	११०	आपगा			
५८	अमीया	१११	वद्री पावन (वद्रीवका-वशिष्ठोद्वाह) (वशिष्ठ प्रवाह)	...		
		११२	रुद्र मार्ग	...		
	थानेसर	११३	एक रात्र	...		
		११४	आदित्याश्रम (सूर्यतीर्थ)	...	रविवार का माहात्म्य	
		११५	सोमतीर्थ	...		
		११६	दधीचि तीर्थ या शरणावत अथवा स्थाणु तीर्थ	(शरयणावत)		यहां दधीचि के मस्तक की अस्थि को वध के

यज्ञ बनानेके लिये पाया था। ऋग्वेद १-८४ (मन्

		११७	कन्याश्रम	...		
		११८	यज्ञोपवीति	...	स्वधर्म ज्ञान फल	
		११९	प्रवाहाख्ये	...	सर्व तीर्थ फल	
		१२०	विहार	...	दुर्गति विनाश, सर्व सुख प्राप्ति	यह महादेव पार्वती का विहार स्थान है।
		१२१	दुर्गा तीर्थ	...		
		१२२	सरस्वती कूप (पितृतीर्थ)	पितृ पूजन		
		१२३	प्राची सरस्वती	...	श्राद्ध से कठिन काम पूर्ण हों पञ्चमी का माहात्म्य है।	
५९	खेड़ी रामनगर	१२४	शुक्र तीर्थ	...	श्राद्ध से पितरोद्धार	
		१२५	ब्रह्म तीर्थ	...	मुक्ति प्राप्ति	